बेटा करे सवाल

अंजू गोस्वामी, गायत्री यादव, दीक्षा यादव

हम अपने आसपास देखते हैं, अखबार-पत्रिकाओं में पढ़ते हैं कि लड़कियों के लिए बहुत सारे कानून बनाए गए हैं। लेकिन हम लड़कियों को हक दिलाते-दिलाते कहीं-न-कहीं लड़कों के अधिकारों को भूल रहे हैं। देखा जाए तो सिर्फ लड़कियाँ ही नहीं, लड़के भी कई सामाजिक परेशानियों के दौर से गुज़रते हैं। इस लेख में समझने की कोशिश करेंगे कि लड़कों को अक्सर किस-किस तरह की परेशानियों और बन्धनों का सामना करना पड़ता है।

भावनाएँ

हम बचपन से ही देखते आ रहे हैं कि जब पापा-मम्मी कोई खिलौना लाते थे तो भाई के लिए ट्रक और हमारे लिए गुड़िया लाई जाती थी। भाई कहता था कि "यह गुड़िया मुझे बहुत प्यारी लग रही है, मुझे भी इससे खेलना है। यह ट्रक तुम रख लो।" इस पर पापा कहते, "नहीं बेटा, वह तुम्हारे लिए नहीं है। तुम्हारे लिए ट्रक है, घोड़ा है, ट्रैक्टर है। गुड़िया से लड़कियाँ खेलती हैं।" भाई का मुरझाया हुआ चेहरा देख, मेरे मन में यह कशमकश चलती कि ऐसा क्यों है कि लड़के गुड़िया से नहीं खेल सकते।

ऐसे ही हम देखते आ रहे हैं कि कई बार लड़कों को तैयार होने का मन होता है, लड़कियों के साथ घूमने का मन होता है लेकिन कहीं-न-कहीं शुरुआत से ही ऐसी मानसिकता बना दी जाती है जिससे लड़के-लड़कियों में भेद किया जाने लगता है। इसके कुछ उदाहरण देखते हैं - 'तू लड़का है, लड़कियों जैसे तैयार नहीं हो सकता, लड़कियों के साथ घूम नहीं

सकता, कक्षा में लड़का-लड़की अलग-अलग बैठेंगे, तू लड़का है तो बात-बात पर रोना नहीं'। एक तरह से उसे मज़बूत बनाए रखने के लिए उसकी भावनाओं को लगातार दबाया जाता है और उस पर कई सारी बन्दिशें लगा दी जाती हैं।

लड़कियों से बात करने में झिझक

कुछ लड़के लड़कियों से बात करने में बहुत झिझकते हैं। डरते हैं कि कहीं उनकी बातों से किसी लड़की को असहज महसूस न हो। लेकिन कई बार यह कहते हुए कि इस लड़के की नीयत ठीक नहीं है, यह तो लड़कियों के आसपास ही मण्डराता रहता है, लड़कों के चरित्र पर भी सवाल खड़े कर दिए जाते हैं। कुछ लड़के तो इस प्रवृत्ति के होते हैं लेकिन कुछ पर ये इल्ज़ाम थोप दिए जाते हैं। ऐसी स्थितियों में यह कहावत सटीक बैठती है कि 'गेहूँ के साथ घुन भी पिसता है'।

पीटना-छेड़छाड़

जब मैं नौवीं कक्षा में थी, तब मेरी सहपाठी एक लड़के को पसन्द करती थी किन्तु वह लड़का उसे भाव नहीं देता था। एक दिन स्कूल की छुट्टी होने के बाद लड़की ने उसे रोका और उनके बीच कुछ बातचीत हुई। कुछ देर बाद लड़की वहाँ से बहुत गुस्से में निकल गई। उस लड़के से पूछने पर उसने हमें बताया कि "वह लड़की मेरे पीछे पड़ी हुई है। मैंने उसे बहुत समझाया कि मैं तुम्हारे बारे में ऐसा नहीं सोचता हूँ तो उसने मुझे धमकाया कि वह कल जाकर सर से मेरी शिकायत कर देगी कि मैं उसे परेशान कर रहा था। मैं थोड़ा डर गया लेकिन फिर भी मैंने कह दिया कि 'जाओ, कर दो शिकायत'।" दूसरे दिन उस लड़की ने लड़के की शिकायत कर दी। लड़के को बहुत डाँटा गया। उसके पापा को बुलाया गया और उसे चेतावनी दी गई कि दोबारा ऐसा हुआ तो उसे स्कूल से निकाल दिया जाएगा।

मुझे इस बात का बहुत बुरा लगा कि उस लड़के की गलती नहीं होने के बावजूद उसे गलत ठहराया गया। उसे सफाई देने का मौका नहीं मिला। वह लड़का 10वीं में पढ़ता था और यह सब होने के बाद वह 10वीं में फेल हो गया। इसके बाद उसने आगे पढ़ाई जारी नहीं रखी।

इस घटना के बाद मुझे महसूस हुआ कि उस लड़के के हक के लिए भी आवाज़ उठाई जानी चाहिए थी क्योंकि हमेशा लड़के ही गलत नहीं होते। जिस तरह कई बार कुछ लड़के लड़कियों के साथ छेड़छाड़ करते हैं, उसी तरह लड़कों के साथ भी लड़कियाँ छेड़छाड़ करती हैं। लेकिन वहाँ पर भी लड़कों को ही गलत ठहराया जाता है। अगर लड़के अपने हक के लिए बातचीत भी करना चाहें तो उनकी आवाज़ को दबा दिया जाता

है। स्कूल में भी लड़कियों की तुलना में लड़कों की ज़्यादा पिटाई होती है। लड़का-लड़की की आपसी लड़ाई या पति-पत्नी के बीच की लड़ाई में कभी-कभी महिला पुरुष को पीट देती है। लेकिन पुरुष चाह कर भी अपनी आपबीती किसी से साझा नहीं कर पाता क्योंकि ऐसा करने पर उसका मज़ाक उड़ाया जाता है कि 'अबे, तू कैसा मर्द है, औरत से पिट गया'।

मानसिकता

एक तरफ हम देखते हैं कि लड़कियों के साथ छेड़छाड़, घरेलू हिंसा और बलात्कार के लिए अलग-अलग कानून बने हुए हैं लेकिन दूसरी तरफ हम पाते हैं कि इन संगीन मामलों के शिकार लड़के भी हो रहे हैं। परन्तु लड़कों के साथ हुई घटनाओं के प्रति समाज का नज़रिया कुछ अलग होता है। लोग सोचते हैं कि लड़कों के साथ ऐसा कैसे हो सकता है। इसी तरह, लड़कियाँ आपस में गले मिल लेती हैं, किस कर लेती हैं, हाथ-में-हाथ डालकर घूम लेती हैं लेकिन यदि यही काम लड़के करते हैं तो लोग कहते हैं कि 'कैसी समलैंगिक जैसी हरकत कर रहा है'।

इस पर मैं अपना एक अनुभव साझा करना चाहूँगी। मेरा भाई बचपन से ही हम बहनों के बीच रहा है। वह आज भी लड़कियों के समूह में रहने में स्वच्छन्द महसूस करता है। एक दिन मेरी चाची ने उसे कहा, "कैसे बाई (महिला) जैसा होता जा रहा है। लड़कियों के बीच में रहता है।" गाँव में भी लोग उसे 'बाई' बोलकर चिढ़ाते हैं। इसी तरह मेरी कोचिंग में भी एक भैया आते थे जिनकी चाल-ढाल लड़कियों जैसी थी। सभी बच्चे उन्हें 'लेडी बॉय' बोलते थे। उनके चाल-चलन से उन्हें आँका जाने लगा था।

संकोच

लड़कियों को अपने जनन अंगों और अपने शरीर में होने वाले बदलावों के बारे में बताने में झिझक होती है। किन्तु वे अपनी माँ, बड़ी बहन एवं

दोस्तों से ये बातें साझा कर लेती हैं। उसी तरह लड़कों को भी जनन अंगों से सम्बन्धित दिक्कतें होती हैं जैसे निजी भाग में जलन, छिल जाना, लग जाना। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि 13-14 वर्ष की उम्र में लड़कों में सीमन यानी वीर्य निर्माण शुरू हो जाता है। कई बार कुछ लड़कों में अपने आप सीमन निकल जाता है। लड़कों को अपने घरवालों से स्वप्नदोष या सीमन रिलीज़ होने के बारे में बात करना बहुत ही शर्मनाक लगता है। एक दफा बिस्तर में पेशाब कर दें, तो उसे बता पाना आसान लगता है किन्तु इस बारे में बताना नहीं। वे इन दिक्कतों को छुपाकर रखते हैं।

ज़िम्मेदारी

समाज और परिवार द्वारा लड़कों को बार-बार यह याद दिलाया जाता है कि "तुम एक लड़के हो, तुम्हें घर की ज़िम्मेदारी उठानी है।" लड़कियाँ 8वीं या 12वीं तक पढ़ती हैं या नहीं भी पढ़ती हैं तो उनके माता-पिता उनकी शादी करवा देते हैं। वहीं, लड़का पढ़ाई पूरी करे या न करे, उस पर ज़बरदस्ती ज़िम्मेदारियाँ डाल दी जाती हैं कि "तुम्हें कमाना है, पूरा घर चलाना है। कमाओगे नहीं तो तुम्हें कोई लड़की नहीं देगा। अपने बीवी-बच्चों को कैसे पालोगे, क्या उनसे भीख मँगवाओगे?" आदि।

इस तरह के ताने मारकर उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है। उनके आत्मविश्वास को गहरी चोट पहुँचती है जिससे कई बार लड़के चिड़चिड़े और गुस्सैल प्रवृत्ति के हो जाते हैं। हमारे समाज में लड़कों को आँकने का एक प्रमुख मापदण्ड है – उनकी सफलता का स्तर। इन सब मानसिक तनावों से लगातार जूझने के कारण कई बार लड़के मारपीट करना या आत्महत्या जैसे कदम तक उठा लेते हैं।

जोरू का गुलाम

हमारी एक दीदी हैं जिन्होंने लव मैरिज की है। उन्होंने बताया कि "मेरे पति मेरी बहुत मदद करते हैं। हम दोनों को ऑफिस जाना पड़ता है। इसलिए हम दोनों मिलकर घर का सारा काम करते हैं। कई बार जब मुझे ज़्यादा काम होता है तो मेरे पति खाना बना देते हैं और कपड़े धो देते हैं। लेकिन मोहल्ले की औरतें आपस में बात कर रही थीं कि 'इसकी पत्नी कैसी है। पति से काम करवाती है। इसको थोड़ी-सी भी शर्म नहीं है। कैसा आदमी है। औरतों वाले काम करता है। अपनी पत्नी की उंगली पर नाचता है। पूरा जोरू का गुलाम है। इससे अच्छा तो इसे औरत ही बना देना चाहिए था। भगवान ने गलती कर दी उसे लड़का बनाकर'।" जो पुरुष घरेलू कामों में मदद करना चाहते हैं, उन्हें भी इस तरह की बातें करके एवं ताने मार के रोक दिया जाता है।

दायरे

समाज ने लड़कों को अलग-अलग दायरों में बाँध रखा है। जैसे 'तुम लड़के हो, तुम्हें पेंट-शर्ट पहनना चाहिए, छोटे बाल रखना चाहिए'। उन्हें काम, भावनाएँ, कपड़े, रूप-रंग, कमाई या व्यवसाय, चाल-ढाल, रहन-सहन आदि से आँका जाता है। हम अपने आसपास देखते हैं कि पुरुषों को महिलाओं की तुलना में ज़्यादा मेहनत वाला काम दिया जाता है। महिलाओं को घर के व पुरुषों को बाहर के काम के दायरों में बाँट दिया जाता है।

टेलीविज़न, समाचार पत्र, विज्ञापनों आदि के माध्यम से भी पुरुषों को सख्त, कठोर और भावनाहीन दिखाया जाता है जिसका वास्तविकता से कोई सम्बन्ध नहीं है। पुरुषों में भी भावनाएँ होती हैं। लेकिन उन्हें सख्त बने रहने के लिए मजबूर किया जाता है। एक विज्ञापन (fair and handsome) में दिखाया जाता है कि जैसे ही एक लड़का *फेयर एंड लवली* क्रीम लगाता है तो पीछे एक गाना बजने लगता है (परी हूँ मैं...)। फिर एक जाने-माने अभिनेता आकर बोलते हैं कि 'मर्दों की सख्त त्वचा पर *पिंक फेयरनेस क्रीम* है बेअसर। 11 मुल्कों के मर्दों की सख्त त्वचा के लिए है *फेयर एंड हैंडसम* क्रीम। इसे लगाओ, गज़ब का गोरापन पाओ'।

एक और विज्ञापन है जिसमें एक लड़का अखाड़े में लड़कियों वाली फेयरनेस क्रीम लगाता है। इस पर हमारे एक अभिनेता कहते हैं कि 'लड़कियों वाली क्रीम लगा रहा है। कल नेल पॉलिश लगाएगा, परसों लिपस्टिक लगाएगा, फिर लंगोट उतारकर लहंगा पहन लेगा। मर्दों की त्वचा होती है सख्त, लड़कियों की क्रीम होती है बेअसर। पहलवान *फेयर एंड हैंडसम* लगा'। लड़के इन सब मसलों में सहज हों या न हों, लेकिन उन पर इन चीज़ों का गहरा सामाजिक दबाव आ जाता है।

सार

इससे हमें यह समझ में आता है कि ज़रूरी नहीं है कि लड़के-लड़कियों के लिए बनाए गए सामाजिक कायदे सही हों। इन रूढ़ीवादी विचारधाराओं ने लोगों की मानसिकताओं को गम्भीर रूप से घायल एवं विकृत कर दिया है। एक तरफ महिलाओं के लिए बने कायदे-कानूनों को बेहतर बनाने के प्रयास चल रहे हैं, लेकिन दूसरी तरफ लड़कों के प्रति हो रहे व्यवहार को नज़रन्दाज़ किया जा रहा है। हम सब भी किसी-न-किसी रूप में इन सब बातों को बढ़ावा देते हैं। लड़कों के दिमाग में जाने-अनजाने यह बैठा दिया जाता है कि मर्द को दर्द नहीं होता, मर्द की कोई भावनाएँ नहीं होतीं, उसे रोना नहीं चाहिए, वह हर वो काम कर सकता है जो महिलाएँ नहीं कर सकतीं, वह कठोर परिश्रम कर सकता है, वह अकेला रह सकता है, कहीं भी जीवनयापन कर सकता है आदि। पुरुषों का भी अस्तित्व होता है, परन्तु इन सामाजिक ढकोसलों एवं मान्यताओं ने उनकी भावनाओं को खोखला कर दिया है। हमें समाजिक तौर पर इस सोच में बदलाव लाने के लिए कदम बढ़ाने चाहिए।

अंजू गोस्वामी: वर्तमान में *एकलव्य* के लाइब्रेरी एण्ड रीडिंग इनिशिएटिव, ओबैदुल्लाहगंज में लाइब्रेरी सपोर्ट पर्सन की भूमिका में कार्यरत। इसके पहले मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर, *एकलव्य,* शाहपुर में बच्चों के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शामिल रहीं। कोविड दौर से बच्चों और समुदाय के लोगों को डॉक्टरी परामर्श में दिखाने का काम भी करती हैं। लिखने में और शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों के साथ ज़मीनी स्तर पर काम करने में दिलचस्पी।

दीक्षा यादव: पिछले तीन साल से *एकलव्य,* शाहपुर में बतौर संचालक के रूप में बच्चों के साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शामिल रहीं। वर्तमान में *एकलव्य* के लाइब्रेरी एण्ड रीडिंग इनिशिएटिव, ओबैदुल्लाहगंज में लाइब्रेरी सपोर्ट पर्सन के रूप में कार्यरत हैं। बच्चों के साथ काम करने में रुचि रखती हैं।

गायत्री यादव: पिछले तीन सालों से मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर, *एकलव्य,* शाहपुर और प्राथमिक स्कूल में गेस्ट टीचर के रूप में शिक्षण कार्य से जुड़ी हुई हैं।

सभी चित्र: हरमन: चित्रकार हैं। दिल्ली कॉलेज ऑफ आर्ट, नई दिल्ली से फाइन आर्ट्स (चित्रकारी) में स्नातक और अम्बेडकर यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली से विज़ुअल आर्ट्स में स्नातकोत्तर। भटिंडा, पंजाब में रहती हैं।

यह लेख सितम्बर, 2022 में *एकलव्य* द्वारा आयोजित 'लेखन कार्यशाला' के दौरान विकसित किया गया था।

इस लेख में उठाए गए मुद्दों के सन्दर्भ में, हाल ही में, *एकलव्य* द्वारा किशोरावस्था के मुद्दों से सम्बन्धित एक किताब *बेटा करे सवाल* भी प्रकाशित की गई है। लेखक: अनु गुप्ता व संकेत करकरे। मूल्य: 260 रुपए।